Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
May 2024 5(5), 944–946

IMPORTANCE OF INFORMATION TECHNOLOGY ON VOCATIONAL INTEREST AND VOCATIONAL ASPIRATIONS OF STUDENTS STUDYING AT HIGHER SECONDARY LEVEL

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि पर सूचना प्रोधौगिकी और व्यवसायिक आकांक्षाओं पर व्यवसायिक रूचि का महत्व

Lipika Raj [1], Deepshikha Saxena [2]

[1] Researcher, Mangalayatan University, Mangalayatan University, Aligarh (U.P.), India
[2] Associate Professor, Mangalayatan University, Mangalayatan University, Aligarh (U.P.), India

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i5.2024.2529

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

English: Education and business are the two wheels of life. Vocational education should make a person so capable through education that he can fulfill his physical needs and can maintain his life himself. Vocational education is that education through which mastery is achieved in a particular subject or field. This is skill training education, which makes students skilled in areas like computer, banking, finance, business etc. To professionalize secondary education, the Education Commission has considered in detail both the levels of education, lower secondary level and higher secondary level. According to the idea at the secondary level, 20 percent of the students from class 8 to 10 should receive vocational education. Similarly, there should be a provision of vocational education for 50 percent of the students at the higher secondary level. Education is a lifelong process. Vocational education through ITC helps in the complete education of the students.

Hindi: शिक्षा और व्यवसाय जीवन के दो पहिए हैं। व्यवसायिक शिक्षा व्यक्ति को शिक्षा के द्वारा इतना समर्थ बनाया जाए कि वह अपनी भौतिक आवश्यकताओं की पूत्रि कर सके तथा अपने जीवन का निर्वाह स्वयं कर सके। व्यवसायिक शिक्षा वह शिक्षा होती है जिसके द्वारा किसी खास विषय या क्षेत्र मे महारत हासिल की जाती है। यह कौशल प्रशिक्षण की शिक्षा होती है, जैसे- कम्प्यूटर, बैंकिंग, वित्त, व्यापार आदि क्षेत्रों में छात्रों को कुशल बनाता है। माध्यमिक शिक्षा का व्यवसायिकरण करने के लिए शिक्षा आयोग ने शिक्षा के दोनों की स्तरों निम्न माध्यमिक स्तर और उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विस्तार से विचार किया गया है। माध्यमिक स्तर पर जो कल्पना थी, उसके अनुसार कक्षा 8 से 10 तक 20 प्रतिशत छात्रों को व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त होनी चाहिए। इसी प्रकार उच्चतर माध्यमिक स्तर छात्रों को 50 प्रतिशत व्यवसायिक शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए। शिक्षा जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है। आई.टी.सी. द्वारा व्यवसायिक शिक्षा विद्यार्थियों के सम्पूर्ण शिक्षा में सहायक होती है।

1. प्रस्तावना

शिक्षा और व्यवसाय जीवन के दो पहिए हैं। व्यवसायिक शिक्षा व्यक्ति को शिक्षा के द्वारा इतना समर्थ बनाया जाए कि वह अपनी भौतिक आवश्यकताओं की पूत्रि कर सके तथा अपने जीवन का निर्वाह स्वयं कर सके। व्यवसायिक शिक्षा वह शिक्षा होती है जिसके द्वारा किसी खास विषय या क्षेत्र मे महारत हासिल की जाती है। यह कौशल प्रशिक्षण की शिक्षा होती है, जैसे- कम्प्यूटर, बैंकिंग, वित्त, व्यापार आदि क्षेत्रों में छात्रों को कुशल बनाता है। माध्यमिक शिक्षा का व्यवसायिकरण करने के लिए शिक्षा आयोग ने शिक्षा के दोनों की स्तरों निम्न माध्यमिक स्तर और उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विस्तार से विचार किया गया है। माध्यमिक स्तर पर जो कल्पना थी, उसके अनुसार कक्षा 8 से 10 तक 20 प्रतिशत छात्रों को व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त होनी चाहिए। इसी प्रकार उच्चतर माध्यमिक स्तर छात्रों को 50 प्रतिशत व्यवसायिक शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए। शिक्षा जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है। आई.टी.सी. द्वारा व्यवसायिक शिक्षा विद्यार्थियों के सम्पूर्ण शिक्षा में सहायक होती है। व्यवसायिक शिक्षा पुरूषों को ही नहीं स्त्रियों को भी व्यवसायिक शिक्षा प्रदान कर आत्मनिर्भर बनाना देश के विकास के दृष्टिकोण से अनिवार्य है। इसलिए व्यवसायिक शिक्षा पुरूषों व स्त्रियों दोनों को

समान अवसर उपलब्ध करवाया जाता है। जो आई.सी.टी. के द्वारा रोचक व आसान बनाया गया है। देश में समय के अनुसार परिवर्तन होते रहा है। समाज में भी परिवर्तन होते रहते हैं, इसलिए शिक्षा के उद्देश्यों में भी समय के साथ परिवर्तन होता है। वर्तमान समय की आवश्यकता के अनुसार विज्ञान एवं तकनीकी शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा पर जोर दिया जाना अनिवार्य है। आधुनिक युग में मानव के विकास में शिक्षा की अहम भूमिका रही है। समय-समय पर शिक्षा को अधिक उपयोगी एवं इसके उद्देश्यों को सार्थक बनाने के लिए विभिन्न शिक्षा आयोगों का गठन किया गया। लगभग सभी शिक्षा आयोगों ने व्यावसायिक शिक्षा के महत्व को स्वीकार किया है। दौलत सिंह कोठारी की अध्यक्षता वाले भारतीय शिक्षा आयोग ने भी व्यावसायिक शिक्षा को महत्व दिया। विद्यार्थियों के आकांक्षाओं को देखते हुए भारत सरकार में पूर्णकालिन और अंशकालीन दोनों पाठ्यक्रमों में व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करती है। पूर्णकालिन प्रशिक्षण आई.टी.आई. (औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान) के माध्यम से प्रदान किया जाता है, जबकि अंशाकलिन पाठ्यक्रम राज्य तकनीकी शिक्षा द्वारा प्रदान किए जाते हैं। उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पाठ में आई.सी.टी. का उपयोग किया जाता है और व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर विद्यार्थियों के आकांक्षाओं का पूरा किया जाता है। आई.सी.टी. के कौशल विकसित करने में शिक्षण पद्धतियों, पाठ्यक्रम, स्कूल प्रशासन और समुदाय महत्वपूर्ण होते हैं। शैक्षिक प्रगति में आज सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की को स्वीकारा जा सकता है। शिक्षा के प्रसार और प्रचार को बढ़ावा देने के लिए आई.सी.टी. का प्रयोग अनिवार्य है। आज उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक विकास पर आई.सी.टी. के द्वारा अधिक बल दिया जा रहा है। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी की वजह से स्थानीय और अंतराष्ट्रीय स्तर पर सूचनाओं का आदान-प्रदान होता है, जो हमारे देश के आर्थिक विकास में काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उच्चतर माध्यमिक रूचि पर एवं आकांक्षाओं को पूरा करने के विज्ञान में भी सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विज्ञान ने सूचना प्रौद्यगिकी का निर्माण किया। तकनीकी क्षेत्र में कम्प्यूटर एक वरदान के समान है आज सूचना प्रौद्यगिकी समस्त क्रियाएँ कम्प्यूटर के माध्यम से ही संचालित होती है। प्रारंभ में कम्प्यूटर का प्रयोग विश्वविद्यालय तक ही सीमिति था। कम्प्यूटर किसी विशेष उद्देश्य की पूत्रि के लिए नहीं किया जाता था। परन्त, धीरे-धीरे व्यवसाय क्षेत्र में भी प्रयोग किया जाने लगा। कम्प्यूटर एक ऐसा यंत्र है जो जीवन के सभी क्षेत्रों में काम कर रहा है तथा विद्यार्थियों के व्यावसायिक रूचि एवं आकांक्षाओं को पूरा कर रहा है। उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में व्यावसायिक रूचि बढ़ाने के लिए या शैक्षिक प्रगति में आज सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की आवश्यकता का सर्वत्र स्वीकारा जा रहा है। शिक्षा के प्रसार और प्रचार को बढ़ावा देने में प्रौद्योगिकी का प्रयोग किया जाता है। वर्तमान में विद्यार्थियों द्वारा नयी तकनीकी यथा- ओवरहेड प्रोजेक्टर, कम्प्यूटर, इंटरनेट आदि के माध्यम से शिक्षण कार्य को सम्पन्न कराया जाता है। जिसमें सूचना एवं संचार प्रौद्यगिकी शिक्षण प्रक्रिया में अपनी प्रभावशाली भूमिका का निर्वाह कर रही है। उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को सूचना एवं संचार प्रौद्यगिकी के द्वारा सभी प्रकार केक शिक्षण सुत्रों का ज्ञान प्राप्त कर व्यावसायिक शिक्षा के रूचि को बढ़ाता है। संचार के माध्यम से व्यावसायिक शिक्षा ज्ञान संचार के समस्त देशों में संभव हो गया है। इस प्रकार शिक्षण सिद्धान्तों के व्यापक प्रयोग एवं उनके ज्ञान से छात्रों को सरल अधिगम प्राप्त हो जाता है। प्रत्येक व्यक्ति कई चीजों के बारे में सूचनाएं हासिल करना चाहता है। सूचनाओं के आदान-प्रदान को सुलभ बनाने का काम आई.सी.टी. ने किया है। सूचना और संचार क्रांति ने समाज के प्रत्येक हिस्से में अपनी जगह बना ली है। अब स्वास्थ्य, शिक्षा, धर्म, व्यापार, प्रशासन, सरकार, उद्योग आदि सभी क्षेत्रों में सूचना प्रौद्यगिकी की महत्वपूर्ण भूमिका है। आज सभी विद्यार्थियों द्वारा आई.सी.टी. का इस्तेमाल हो रहा है। प्ब्ज् का अंग्रेजी में पूरा नाम प्दवितउंजपवद ंदक ब्वउउनदपबंजपवद ज्मबीदवसवहल होता है जिसे सूचना और संचार प्रौद्योगिकी कहा जाता है। सूचना प्रौद्योगिकी कम्प्यूटर आधारित सूचना प्रणाली को कहा जाता है एवं इलेक्ट्रॉनिक संचार भी सूचना प्रौद्योगिकी का एक अहम हिस्सा बन चुका है। उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचि पर सूचना प्रौद्योगिकी और व्यावसायिक आकांक्षाओं पर विद्यार्थियों द्वारा एक नवीन सूचना प्रौद्योगिकी के द्वारा नवीन ज्ञान को सृजन कर नए समाज की सुन्दर संरचना की ओर अग्रसर होता है। विद्यार्थियों के व्यावसायिक आकांक्षाओं के लिए कई योजनाएं सरकार द्वारा प्रयासरत है। उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए आई.सी.टी. के द्वारा व्यावसायिक ज्ञान एक नया संसार अपने लिए लाया है। उनकी भूमिका उनके घर-परिवार की देहरी से शुरू होकर नए क्षितिज तक पहुँच रही है। आज के विद्वान शिक्षा शास्त्री बालक के स्वतंत्र व्यक्तित्व विकास के सिद्धांत को सर्वोपरि मानते हैं। परिस्थितियाँ, मँहगाई और सामाजिक अर्थव्यवस्था देखकर स्वीकार करना पड़ता है कि आज प्रत्येक छात्र को सामाजिक आवश्यकता एवं आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखकर विकासोन्मुखी सूचना प्रौद्योगिकी के द्वारा व्यावसायिक शिखा का अध्ययन कर विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षाओं को पूरा किया जा सकता है। व्यावसायिक आकांक्षाओं तक पहूँचने के लिए आवश्यक है कि विद्यार्थियों को विषय के चुनाव में सूचना प्रौद्योगिकी में अभिरूचि तथा व्यावसायिक ज्ञान को देखे। विद्यार्थियों के मनोभाव को अच्छी तरह समझने का प्रयास हो उन्हें सही दिशा दे सकता है। उच्चतर माध्यमिक स्तर पर प्रत्येक विद्यार्थी की रूचि एवं उसकी व्यावसायिक आकांक्षा को जानना आवश्यक है। उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम में व्यावसायिक शिक्षा को विषय के रूप में रखकर ज्ञान प्राप्त यिा जा सकता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद कई व्यावसायिक उद्योगों की स्थापना हुई। भारतीय नागरिक आज व्यवसाय में विविधता को दृष्टिगत रखते हुए रूचि एंव आकांक्षा को आगे बढ़ाने में है। आई.सी.टी. के द्वारा व्यावसाकिय रूचि का समायोजन किस तरीके से किया जाये, ताकि वह सर्वोत्तम विकास कर उत्तम रोजगार प्राप्त कर सके। आई.सी.टी. के उपयोग ने इसे और प्रभावी बना दिया है। छात्रों की शिक्षा में नित नई-नई तकनीक प्रयुक्त हो रही है। नई तकनीकों के द्वारा छात्र अपने विचारों को एक स्थान से विश्व के सभी क्षेत्र में साक्षा कर सकते हैं। नई तकनीकों का ज्ञान आज छात्रों के लिए आवश्यक हो गया है। उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों के आकांक्षाओं को देखते हुए विद्यालयों में नई तकनीकी ज्ञान एक आवश्यक अंग बन गया है। किसी भी देश के विकास में उस देश की शैक्षिक व्यवस्था का बहुत अधिक महत्व होता है। ऐसी शिक्षा प्रशिक्षण जो छात्रों को निपुण बनाती है। उदाहरण के लिए आई.टी.आई. एवं पॉलीटेकनिक में दी जाने वाली शिक्षा। शिक्षा अपने वास्तविक आवश्यकताओं की प्राप्ति तभी कर सकती है। जब वह शिक्षा व्यावसायिक हो। यह शिक्षा आधुनिक युग की नई मांग है। व्यावसायिक शिक्षा के महत्व को ध्यान में रखते हुए इसे राष्ट्रीय पाठ्क्रम संरचना 2005 (छब्थ्ए 2005) में भी सम्मिलित किया गया है। वर्तमान में उसी शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का स्थान दिया गया है। वर्तमान समय में मानव विज्ञान और तकनीकी ज्ञान के नये आयामों की खोज में अग्रसर है। व्यावसायिक शिक्षा विद्यार्थियों की प्रभावशीलता के द्वारा प्रभावित होती है। जिसमें सूचना

प्रौद्योगिकी महत्वपूर्ण कारक होता है। तकनीकी शिक्षा को विकास की ऊँची दर और व्यावसायिक रूचि पर सूचना प्रौद्योगिकी और व्यावसायिक आकांक्षाओं के प्रभाव की ओर ध्यान आकर्षित करती है और इस बात पर जोर देती है कि हमें इस क्षेत्र में गुणवत्ता लाने का हर संभव प्रयास करने चाहिए। शिक्षा के क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी द्वारा व्यावसायिक शिक्षा एक ऐसा माध्यम है, जो भारत देश को उच्चतर मार्ग पर अग्रसर करती है। भारत को शिक्षा के सार्वभौमिक लक्ष्य को प्राप्त करना हमारी संवैधानिक प्रतिबद्धता है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सहभागिता प्राप्त करना चाहिए। वर्तमान में कई आई.सी.टी. का विकास हुआ। इसके अंतर्गत रेडियो, टेलीविजन, कम्प्यूटर, टेपरिकॉर्डर और शिक्षा मशीन जैसे प्रोजेक्टर, स्मार्ट बोर्ड आदि व्यावसायिक शिक्षा में महत्वपूर्ण योदान निभाते हैं। आधुनिक शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षण बिना आई.सी.टी. के प्रयोग से संभव नहीं है। शिक्षा के क्षेत्र में आई.सी.टी. की अहम भूमिका है। छात्र भाषा संकेत, हाव भाव आदि की सहायता से अपने मन के विचारों का सम्प्रेषण करते हैं। इसे तकनीकी के द्वारा दो या दो से अधिक लोगों के बीच विचारों, भावनाओं, सूचनाओं आदि का आदान-प्रदान किया जाता है। व्यावसायिक शिक्षा की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए छात्रों की शैक्षिक आवश्यकता को सूचना एवं सम्प्रेषण का अत्यधिक महत्व है। विद्यार्थियों के योग्यतानुसार पाठ्य सामग्री को सरल, सुबोध, सुगम बनाने में आई.सी.टी. एक महत्वपूर्ण उपकरण है। आई.सी.टी. ने दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में भी व्यावसायिक शिक्षा को सशक्त किया है। विद्यार्थियों में आई.सी.टी. अभिप्रेरणा डवजपअंजपवद उत्पन्न करती है और व्यावसायिक शिक्षा के लिए ध्यान केन्द्रीत करती है। शैक्षिक क्षेत्र में जब कोई अनुसंधान कार्य किया जाता है तो उस अध्ययन का महत्व प्रवृति आदि की आवश्यकता सिद्ध करना है। इसलिए आवश्यक शोध के परिणाम और निष्कर्ष रूचि एवं आकांक्षाओं को किस प्रकार प्रभावित करेंगे। शिक्षा की गुणवत्ता से विद्यार्थियों की रूचि एवं आकांक्षा प्रभावित होती है।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

REFERENCES

Singh, S. (2002). New Dimensions of Information Technology. New Delhi: Rawat Publication.
Singh, P. (2014), Information and Communication Technology in Education, Agra: Rakhi Rawat Publication.
Sharma, K. (2006-07). Computer Literacy and Educational Applications, Agra: Radha Prakashan Mandir.
Sharma, R. Mishra, M. (2014). Computer Education, Delhi: Arjun Publication House.
Sharma, S. B. (2015) Computer Education, Agra: Rakhi Publication.
Srivastava, R. and Madan, P. (2010) Information and Communication Technology, Meerut: R. Lal Book Depot.
Tripathi, S., Pandey, R. (2014). Modern Computer Education, Agra: Rakhi Publication.
Vijay, S. K. (2009) Computer Science and Information and Information Technology, Bhopal Madhya Pradesh Hindi Granth Academy.
Verma, M. Bhargava, M. (2012). Primary Computer Education, Agra Rakhi Publications
Sarkar, S. and Debbarma, M. (2019). Research Study: Attitude of the Teachers
Secondary Schools Willing to Tribal Community towards Information Technology